भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर -2026-27

कक्षा-10	**विभाग: हिंदी**	**Date – 06-08-26**
QB	**संचयन-सपनों के-से दिन-गुरुदयाल सिंह**	**Note: Pl. file in portfolio**

नाम: _____अनुभाग: _____ अनुक्रमांक: _____ दिनांक: _____

1.कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती-पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

उत्तर- 'कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती।'- अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए लेखक गुरुदयाल सिंह अपने बचपन की एक घटना की ओर संकेत करते हैं । वे कहते हैं कि बचपन में उनके आधे से अधिक साथी हरियाणा या राजस्थान से व्यापार के लिए आए परिवारों से संबंधित थे । उनके कुछ शब्द सुनकर लेखक और उनके साथियों को हँसी आ जाती थी । बहुत-से शब्द समझ नहीं आते थे । किंतु जब वे सब मिलकर खेलते थे तब सभी को एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ में आ जाती थी और खेल में किसी तरह की बाधा नहीं आती थी ।

2 - पीटी साहब की 'शाबाश' फ़ौज के तमगों- सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - पी.टी.साहब की 'शाबाश' को बच्चे अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि मानते थे । वस्तुतः पी.टी.साहब बड़े कठोर स्वभाव के थे और थोड़ी-सी गलती पर भी वे चमड़ी उधेड़ने की कहावत को सच करके दिखा देते थे । लेकिन जब बच्चे स्कूल में स्काउटिंग का अभ्यास करते हुए कोई गलती न करते तो वे सभी को शाबाश कहते । उस समय बच्चों को ऐसा लगता था मानो उन्होंने फ़ौज के सारे तमगे जीत लिए हों ।

3 - नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर - हर साल जब लेखक अगली कक्षा में प्रवेश करता तो उसे पुरानी पुस्तकें मिला करती थीं। उसके स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी एक बहुत धनी लड़के को उसके घर जा कर पढ़ाया करते थे। हर साल अप्रैल में जब पढ़ाई का नया साल आरंभ होता था तो शर्मा जी उस लड़के की एक साल पुरानी पुस्तकें लेखक के लिए ले आते थे। नई कापियों और पुरानी पुस्तकों में से ऐसी गंध आती थी कि वह गंध उसे उदास कर देती थी । अन्य विद्यार्थियों की तरह लेखक में भी नई किताबों से पढ़ने की उमंग और उत्साह भरा रहता था परंतु पुरानी किताबों को देखकर वह उदास हो जाता था ।

4 - स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता है?

उत्तर - जब लेखक और उसके साथी धोबी द्वारा धुली वर्दी और पालिश किए गए चमकते जूते और जुराबों को पहनकर स्काउटिंग की परेड करते तो लगता कि वे भी फौजी ही हैं। मास्टर प्रीतमचंद लेखक और उसके साथियों को परेड करवाते और मुँह में सीटी लेकर लेफ्ट-राइट की आवाज़ निकालते हुए मार्च करवाया करते थे। फिर जब वे राइट टर्न या लेफ्ट टर्न या अबाऊट टर्न कहते तो सभी विद्यार्थी अपने छोटे-छोटे जूतों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर ठक-ठक

करते और ऐसे घमंड के साथ चलते जैसे वे सभी विद्यार्थी न हो कर, बहुत महत्त्वपूर्ण 'आदमी' हों, जैसे किसी देश का फौज़ी जवान होता है, अर्थात लेखक कहना चाहता है कि सभी विद्यार्थी अपने- आप को फौजी समझते थे।

5 - हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तर - मास्टर प्रीतमचंद चौथी कक्षा को फ़ारसी पढ़ाने लगे थे। प्रीतमचंद ने बच्चों को एक शब्दरूप याद करने को कहा और आज्ञा दी कि कल इसी घंटी में जुबानी सुनेंगे। दूसरे दिन मास्टर प्रीतमचंद ने बारी-बारी सबको सुनाने के लिए कहा तो एक भी लड़का न सुना पाया। मास्टर जी ने गुस्से में सभी विद्यार्थियों को मुर्गा बना दिया और बर्बरतापूर्वक उनकी पिटाई करने लगे । जब लेखक व उसके सहपाठियों को सज़ा दी जा रही थी तो उसके कुछ समय पहले शर्मा जी स्कूल में नहीं थे। आते ही जो कुछ उन्होंने देखा वह सहन नहीं कर पाए। शायद यह पहला अवसर था कि उन्होंने पीटी प्रीतमचंद की उस असभ्यता एवं जंगलीपन को सहन नहीं किया और वह भड़क गए । यही कारण था कि हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को मुअत्तल कर दिया।

6 - लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल ख़ुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

उत्तर - बचपन में लेखक को स्कूल जाना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था परन्तु जब मास्टर प्रीतमचंद मुँह में सीटी ले कर लेफ्ट-राइट की आवाज़ निकालते हुए मार्च करवाया करते थे और सभी विद्यार्थी अपने छोटे-छोटे जूतों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर ठक-ठक करते और ऐसे घमंड के साथ चलते जैसे वे सभी विद्यार्थी न हो कर, बहुत महत्त्वपूर्ण 'आदमी' हों, जैसे किसी देश का फौज़ी जवान होता है । स्काउटिंग करते हुए कोई भी विद्यार्थी कोई गलती न करता तो पीटी साहब अपनी चमकीली आँखें हलके से झपकाते और सभी को शाबाश कहते। उनकी एक शाबाश लेखक और उसके साथियों को ऐसे लगने लगती जैसे उन्होंने किसी फ़ौज के सभी पदक या मैडल जीत लिए हों। यह 'शाबाश' लेखक को दूसरे अध्यापकों से मिलने वाले 'गुड्डों' से भी ज्यादा अच्छा लगता था। यही कारण था कि बाद में लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा।

7 - लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुटियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?

उत्तर - जैसे-जैसे लेखक की छुट्टियों के दिन ख़त्म होने लगते तो वह दिन गिनने शुरू कर देता था। हर दिन के ख़त्म होते-होते उसका डर भी बढ़ने लगता था। वह सोचा करता था कि गणित के मास्टर जी द्वारा दिए गए दो सौ सवालों को रोज़ाना दस सवाल निकालकर बीस दिन में आसानी से पूरा किया जा सकता है । जब लेखक ऐसा सोचना शुरू करता तब तक छुट्टियों का सिर्फ एक ही महीना बचा होता। एक-एक दिन गिनते-गिनते खेलकूद में दस दिन और बीत जाते। फिर वह अपना डर भगाने के लिए सोचता कि दस क्या, पंद्रह सवाल भी आसानी से एक दिन में किए जा सकते हैं। जब ऐसा सोचने लगता तो ऐसा लगने लगता जैसे छुट्टियाँ कम होते-होते भाग

रही हों। दिन बहुत छोटे लगने लगते थे। लेखक ओमा की तरह जो उदंड लड़का था उसी की तरह बनने की कोशिश करता क्योंकि वह छुट्टियों का काम करने के बजाय अध्यापकों की पिटाई अधिक 'सस्ता सौदा' समझता था और काम न किया होने के कारण लेखक भी उसी की तरह 'बहादुर' बनने की कल्पना करने लगता।

8 - पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

पी.टी.प्रीतम चंद के व्यक्तित्व की विशेषताएँ इस प्रकार हैं ।

(i). बाह्य व्यक्तित्व-पीटी प्रीतमचंद ठिगने कद के थे, उनका शरीर दुबला-पतला पर गठीला था। उनका चेहरा चेचक के दागों से भरा था। उनकी आँखें बाज की तरह तेज़ थीं। वे खाकी वर्दी, चमड़े के पंजों वाले बूट पहनते थे। उनके बूटों की ऊँची एड़ियों के नीचे खुरियाँ लगी रहती थीं। बूटों के अगले हिस्से में पंजों के नीचे मोटी सिरों वाले कील ठुके रहते थे।

(ii). आंतरिक व्यक्तित्व

सख्त अध्यापक- उनके जितना सख्त अध्यापक किसी ने पहले नहीं देखा था। वे छात्रों के साथ कठोर व्यवहार करते थे । प्रार्थना के समय अगर कोई छात्र सिर इधर-उधर हिला दे या एक पैर से दूसरे पैर की पिंडली में खुजाने लगे तो उस छात्र की चमड़ी उधेड़ डालते थे । पीटी साहब चौथी कक्षा को फ़ारसी भी पढ़ाते थे। एक दिन बच्चे उनके द्वारा दिया गया शब्द-रूप रट कर नहीं आए। इस पर उन्होंने बच्चों को पीठ ऊँची करके क्रूरतापूर्ण ढंग से मुर्गा बनने का आदेश दिया ।

कुशल प्रशिक्षक-वे कुशल प्रशिक्षक थे। वे छात्रों को स्काउट की ट्रेनिंग दिया करते थे । वे छात्रों से परेड़ करवाते थे । उनके इस प्रशिक्षण कार्य से छात्र सदा प्रसन्न रहा करते थे। वे छात्रों द्वारा सही काम करने पर शाबाशी भी देते थे।

अनुशासन प्रिय-प्रीतमचंद अनुशासन प्रिय होने के कारण कठोर अनुशासन बनाए रखते थे। वे छात्रों को भयभीत रखते थे। यदि कोई विद्यार्थी उनकी बात नहीं मानता तो वे उसकी खाल खींचने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

स्वाभिमानी-वे बहुत स्वाभिमानी भी थे क्योंकि जब हेडमास्टर शर्मा ने उन्हें निलंबित कर दिया तो वे गिड़गिड़ाए नहीं, चुपचाप चले गए और पहले की ही तरह आराम से रह रहे थे।

9- विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में जिन युक्तियों को अपनाया गया है उसमें मारना-पीटना और कठोर दंड देना शामिल हैं। उस समय की शिक्षा पद्धति में डाँट-फटकार की बहुत अहमियत थी ।शिक्षा भय की वस्तु समझी जाती थी । मुर्गा बनाना, थप्पड़ मारना, झिड़कना और डंडे मारना, उस समय ऐसे कठोर दंड थे, जिनसे बालकों को न केवल शारीरिक कष्ट होता था बल्कि उन्हें मानसिक यंत्रणा भी दी जाती थी । इन कारणों की वजह से बहुत से बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। परन्तु वर्तमान में इस तरह मारना-पीटना और कठोर दंड देना बिलकुल मना है। आजकल के अध्यापकों को सिखाया जाता है कि बच्चों की भावनाओं को समझा जाए, उसने यदि कोई गलत काम किया है तो यह देखा जाए कि उसने ऐसा क्यों किया है। उसे उसकी गलतियों

के लिए दंड न देकर, गलती का एहसास करवाया जाए। तभी बच्चे स्कूल जाने से नहीं डरेंगे बल्कि ख़ुशी-ख़ुशी स्कूल जाएँगे। तनावमुक्त और शांत सौहार्दपूर्ण वातावरण में दी गई शिक्षा अधिक जीवनोपयोगी सिद्ध होगी ।

10 -प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज्यादा रूचि लेने पर रोकते हैं और समय बर्बाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए -

(क) खेल आपके लिए क्यों जरुरी है?

उत्तर - खेल जितना मनोरंजक होता है उससे कही अधिक सेहत के लिए आवश्यक होता है। कहा भी जाता है कि 'स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है।' बच्चों का तन जितना अधिक तंदुरुस्त होगा, उनका दिमाग उतना ही अधिक तेज़ होगा। खेल-कूद में बच्चों को नैतिक मूल्यों का ज्ञान भी होता है जैसे- साथ-साथ खेल कर भाईचारे की भावना का विकास होता है, समूह में खेलने से सामाजिक भावना बढ़ती है और साथ-ही-साथ प्रतिस्पर्धा की भावना का भी विकास होता है।

(ख) आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिनसे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

जितना खेल जीवन में जरुरी है, उतने ही जरुरी जीवन में बहुत से कार्य होते हैं जैसे-पढाई । यदि खेल स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, तो पढाई भी आपके जीवन में कामयाबी के लिए बहुत आवश्यक है। यदि हम अपने खेल के साथ-साथ अपने जीवन के अन्य कार्यों को भी उसी लगन के साथ पूरा करते जाएँ जिस लगन के साथ हम अपने खेल को खेलते हैं तो अभिभावकों को कभी भी खेल से कोई आपत्ति नहीं होगी।